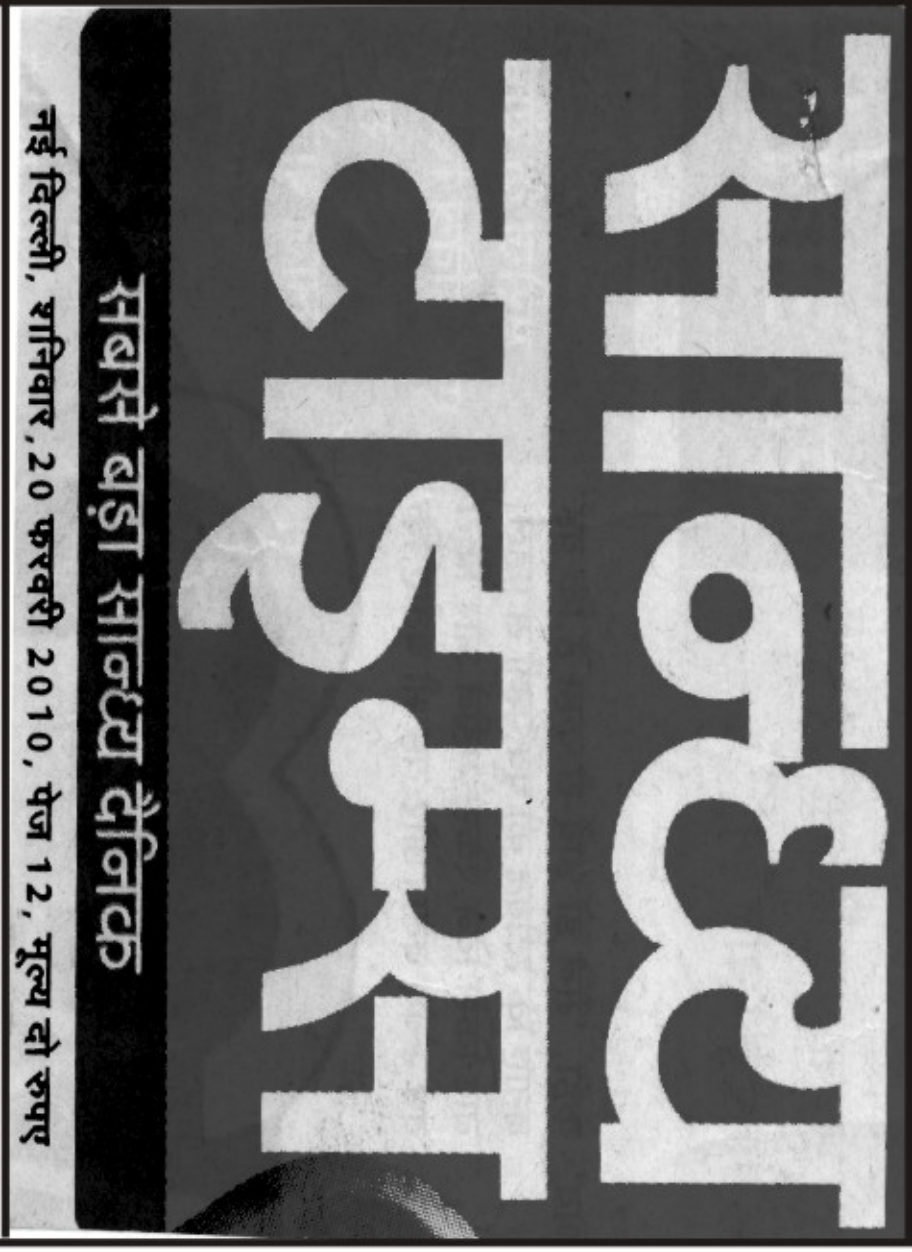

सबसे बड़ा सान्ध्य दैनिक
नई दिल्ली, शनिवार, 20 फरवरी 2010, पेज 12, मूल्य दो रुपए

पैकेजिंग इंडस्ट्री की 'पैकिंग'

नॉर्थ इंडिया की क्राफ्ट पेपर मिल्स द्वारा 20 दिन में तीन बार कीमतें बढ़ा दिए जाने से पैकेजिंग इंडस्ट्रीज 'पैक' होने यानी बंद होने के कगार पर पहुंच गई हैं। पैकेजिंग इंडस्ट्रीज की जॉइंट एक्शन कमेटी (जेएसी) के कन्वीनर हरीश मदान का कहना है कि नीतियों और कानून की अनदेखी कर की गई इस बढ़ोतरी के बारे में सरकार को हस्तक्षेप करना चाहिए। श्री मदान के अनुसार, पैकेजिंग इंडस्ट्री के लिए पेपर मेन मटीरियल है। इसकी कीमत में तीन-चार हजार रुपए प्रति टन की बढ़ोतरी से लागत बढ़ गई है। स्टार्च और स्टिचिंग वायर की कीमत तो 50 परसेंट बढ़ी है। इस सब का असर आम लोगों पर पड़ेगा। दूध और दवाई जैसी चीजें भी अब बिना पैकिंग के नहीं बिकती हैं। इसलिए तुरंत सरकारी दखल जरूरी है। (प्रस)